

ACHARYA SHREE SURENDRASURISHWARJI JAIN TATVA GYANSHALA

12, SHREYANSNATH SOCIETY, B/H DHARNIDHAR TEMPLE,
GODAVARI ROAD, VASANA, AHMEDABAD-7

Book Issue Slip

Member No. : 3013

Mobile Number : 9426593189

Receipt No. : A2263

Member Name : मितेश जसवंतलाल शाह

Total Issued : 4508

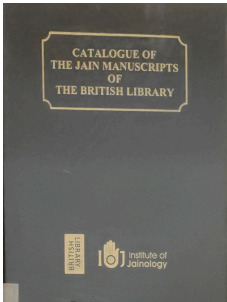
Address : 43, नवकार फ्लेट, बेरेज रोड, वासणा

Issue Date : 09/02/2024

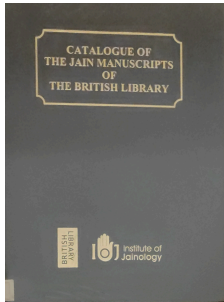
Last Date : 09/05/2024

Sr No.	Vargank No.	Kruti Name
1	AA01293	केटलोग ओफ ध जैन मनुस्क्रिप्ट्स ओफ ध ब्रिटीश लायब्रेरी (इन्कल्युडींग ध होल्डींग ओफ ध ब्रिटीश म्युझीम एन्ड ध विकटोरीया एन्ड एलबर्ट म्युझीम) (भाग-1) (इंट्रोडक्शन, बाईब्लोग्राफी, एपेन्डीकस, इन्डेक्स, प्लेट्स)(Catalogue of The Jain Manuscripts of the British Library) (Including the holdings of the British Museum and the Victoria & Albert Museum) (Vol-1) (Introduction, Bibliography, Appendices, Indexes, Plates)
2	AA01294	केटलोग ओफ ध जैन मनुस्क्रिप्ट्स ओफ ध ब्रिटीश लायब्रेरी (इन्कल्युडींग ध होल्डींग ओफ ध ब्रिटीश म्युझीम एन्ड ध विकटोरीया एन्ड एलबर्ट म्युझीम) (भाग-2) (केटलोग, नं. 1 टु 687 बाईब्लोग्राफी, एपेन्डीकस, इन्डेक्स, प्लेट्स)(Catalogue of The Jain Manuscripts of the British Library) (Including the holdings of the British Museum and the Victoria & Albert Museum) (Vol-2) (Catalogue, Nos. 1 to 687)
3	AA01295	केटलोग ओफ ध जैन मनुस्क्रिप्ट्स ओफ ध ब्रिटीश लायब्रेरी (इन्कल्युडींग ध होल्डींग ओफ ध ब्रिटीश म्युझीम एन्ड ध विकटोरीया एन्ड एलबर्ट म्युझीम) (भाग-3) (केटलोग नं. 688 थी 1425)(Catalogue of The Jain Manuscripts of the British Library) (Including the holdings of the British Museum and the Victoria & Albert Museum) (Vol-3) (केटलोग, नं. 688 थी 1425)

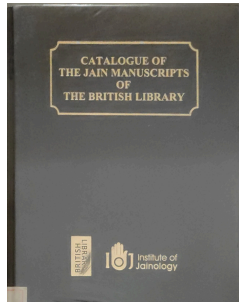
AA01293



AA01294



AA01295



Notes : AA01293, AA01294, AA01295 - विश्वचंद्र म.सा.

AA - A Size Books, वासणा ज्ञानभंडार, अमदावाद

Book Received By

Book Issue By

संस्थाना नियमो :

- 1) संस्थाना पुस्तको फक्त मेम्बरने ज आपवामां आवशे.
- 2) पुस्तक 90 दिवसमां परत करवानुं रहेशे. कदाच वधारे समय राखवानुं थाय तो 90 दिवस बाद रिन्वु कराववु अनिवार्य छे.
- 3) पुस्तक फाटी के खोवाय जाय तो वाचके संस्था नक्की करे तेदलो दंड भरवानो रहेशे. दंडनी रकम पुस्तकनी छापेली किमत करता वधु होई शके छे.